जमदूत ।।३।।

पद ९२ (हिंदी)

(राग: हमीर कल्याण - ताल: त्रिताल)

नयन अद्भुत ।।२।। माणिक कहे वाको सुमरन करत। कंप छुटे

भज मन रेवणसिद्ध अवधूता ।।ध्रु.।। माथा जटा वाघांबर ओढे। अंग चढाय बभूत ।।१।। त्रिशूल हात धरे बिजया चढाये। आरक्त